भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-17, अंक-9 सोमवार, 26.9. 94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी सितम्बर, 1994	वार्षिक चन्दा-50.00 प्रति अंक : 5.00

अमर गुणातीत भावना का अमृत बरसाती शरद्पूर्णिमा...

साकार ब्रह्म मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के धरती पर प्रगट होने का परम पवित्र व अमर गुणातीत भावना का अमृत बरसाता हुआ, शरदपूर्णिमा का मंगलकारी दिन आ रहा है।

कई जन्मों से मन, स्वभाव, प्रकृति के अधीन जीते हुए त्रिविध तापों से तपित जीवों की आत्मा को आध्यात्मिक सच्ची शीतलता प्रदान करने, धरती को सनाथ करने का दिन भी कैसा चुना.... शरद्पूर्णिमा! यानि-सुंदर, शीतल, मधुर, शांत दिन! सबके जीवन व आत्मा में उजाला करने का सांकेतिक दिन..... जिस तरह शरदपूर्णिमा के दिन पावनकारी चन्द्रमा अपनी पूर्ण कलाओं, पूर्ण रोशनी को लेकर आकाश में उतरता है, उसी तरह मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी अपने आप में ब्रह्म के पूर्ण लक्षण, साधुता के हुन्नर प्रगटाए हुए श्रीजी महाराज जैसी विभूति की ज्योति धरती पर अखंडित जलती रखने प्रगट हुए..... महाराज अक्षरधाम से गुणातीतानंदस्वामी को साथ लेकर आए थे। पुरुषोत्तम यानि परब्रह्म ! पुरुषोत्तम के स्वरूप को समझने के लिए अक्षरब्रह्म के स्वरूप को समझना जरुरी होता है। अक्षरब्रह्म वही अक्षरधाम है। जो ब्रह्म को जान लेता है वही परब्रह्म को पहचान सकता है। इसलिए अक्षररूप होकर-ब्रह्मरूप होकर पुरुषोत्तम की-परब्रह्म की उपासना ही मूल रहस्य है। उपनिषद् में वचन है कि 'ब्रह्मविद् आप्नोति परम्-ब्रह्म' को जाने वही परब्रह्म को पाता है। इस प्रकार महाराज व स्वामिश्री दो शरीर होते हुए अविभाज्य आत्मा थे....

सच! मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को यदि महाराज अपने साथ नहीं लाए होते तो आत्यंतिक कल्याण की यह पीढ़ी, राजमार्ग, दीया से दीया जलने वाली परम्परा की कल्पनामात्र ही रहती.... स्वामिश्री नहीं आए होते तो हमें सदा सनाथ कौन बनाता? एकांतिक धर्म क्या है और किसके द्वारा सहजता से सिद्ध हो सकता है इसकी कल्पना भी किसे और कैसे आती? समस्त ऐश्वर्यों, रिद्धि-सिद्धि पर सेरे लगाकर, अजोड़ अद्वितीय स्वामी-सेवकभाव व दासत्वभक्ति का सम्यक् दर्शन क्या किसी को भी हो पाता?

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी जैसी स्वरूपनिष्ठा, माहात्म्यज्ञान, नियम-धर्म, वैराग्य और ब्रह्मभाव की स्पष्ट, सचोट बातें किसी ने नहीं की... आज 200 साल के बाद भी वे बातें हर गृहस्थ, हर साधक, हर मुमुक्षु को यथार्थ मार्गदर्शन कराती है, बल देती है.... अगर कोई उन बातों की जुगाली करे, उन्हें जीवन में लाने का प्रयत्न करे तो व्यवहारिक व आध्यात्मिक समाधान मिलेंगे ही। **गुणातीत** जैसा सरल ज्ञान आज तक किसी

युग पुरूष ने नहीं प्रर्वताया! अभी तक लोकप्रधान, व्यवहारप्रधान, मनप्रधान, वृत्तिप्रधान, स्वभावप्रधान सत्संग चलता था.... स्वरूप-प्रधान सत्संग तो केवल **गुणातीत** ने ही समझाया!

स्वामिश्री-जिन्होंने अंतर में महाराज को अखंड धारे थे, उसके बावजूद भी महाराज की प्रगट मूर्ति के दर्शन की तान और भूख उन्हें रहा करती थी। पराभक्ति के अति उत्तम लक्षण समान प्रगट भगवान के अखंड और अविरत संबंध से ही कृतकृत्यता मानने में ही भक्त की सिद्धि है। शिक्षापत्री का यह वचन-तत्र ब्रह्मात्मना कृष्ण सेवामुक्तिश्वगम्यताम् ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म परमात्मा की सेवा में अखंड रहना वह ही मुक्ति! स्वामिश्री स्वयं अनादि ब्रह्म थे। परन्तु पृथ्वी पर एकांतिकी भक्ति का अति उच्चतम आदर्श प्रवर्ताने और प्रगट भगवान का अखंड अनुसंधान वह ही भक्ति, वह ही आत्यंतिकी मुक्ति है, यह सिद्धांत समझाने के लिए ही स्वामिश्री का पृथ्वी पर महाराज के साथ विचरण था। फिर भी स्वामिश्री का जीवन बहुत ही सामान्य दिखाई पड़ता था।

एक बार महाराज संतों व काठी दरबारों के साथ गढडा से निकले और रास्ते में एक गांव में हरिभक्तों को दर्शन देने थोड़ी देर रूके ....खाने का समय होने आया था सो हरिभक्तों ने महाराज को खाना खाने रुकने का आग्रह किया, पर महाराज ने कहा कि हमें जल्दी जाना है, सो कुछ सूखा नाश्ता दे दो। हरिभक्तों ने तुरंत नारियल के लड्डु बनाये। महाराज ने सब संतों को लड्डु का प्रसाद दिया। पर स्वामिश्री को तो महाराज के दर्शन की सदा भूख थी, न कि लड्डु की ! चूँकि जोड़ में रहने का नियम था, सो स्वामिश्री ने एक साधु को कहा कि तुम मेरे साथ यदि दौड़ो तो मैं मेरे हिस्से का लड्डु तुम्हें दे दूँगा। यूं उस साधु को अपने हिस्से का लड्डु देकर अपने साथ घोड़ी पर विराजे महाराज के पीछे-पीछे दौड़ने स्वामिश्री ने राजी कर लिया। स्वामिश्री महाराज की घोड़ी के पीछे-पीछे दौड़ते जाएं और मूर्ति का सुख लेते जायें..... टेढ़े-मेढ़े पत्थर भरे रास्ते, खेतों में, काँटों में, शरीर की परवाह किए बिना महाराज के दर्शन के लिए दौड़ते रहे! स्वामिश्री की अटूट श्रद्धा देखकर महाराज उन्हें देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। पूरे एक गांव स्वामिश्री महाराज के दर्शन के लिए दौड़े! आत्मा में महाराज की मूर्ति के अखंड दर्शन होते हुए भी स्थूल दर्शन की कैसी महिमा!

स्वामिश्री का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने समान है। उनका जितना गुणगान, जितनी महिमा कही जाए वह कम है। दृष्टिमात्र से जो कई जन्मों के प्रारब्ध बदल दें वे स्वामिश्री की सामर्थ्य कैसी होगी वह निम्न प्रसंग से पता चलता है.....

सर्दी की शाम थी और ठंड भी जोर से पड़ रही थी। स्वामिश्री के शरीर में ठंड की असर दिखाई दे रही थी। इतने में स्वामिश्री की नजर आराम कर रहे एक लकड़हारे पर पड़ी। उन्होनें मन में संकल्प करा कि इस का दारिद्र काटना है। करुणामूर्ति स्वामिश्री के अंतर में ही ऐसी करुणा थी कि जिसके ऊपर उनकी दृष्टि पड़ती उसका यह लोक और परलोक सुधर ही जाता। इस लकड़हारे की ओर दृष्टि करके स्वामिश्री ने मनजी ठक्कर को कहा–'तुम उन दो लकड़हारों के पास जाओ और ईंधन के लिए लकड़ी दे तो थोड़ा लेते आना ताकि जला कर आग ताप लें।' सो मनजी ठक्कर ने वहां जाकर उस लकड़हारे को कहा–'हमारे साधु वृद्ध हैं और उन्हें ठंड लगी है तो थोड़ी लकड़ी दोगे?' तब वह लकड़हारे ने अपनी मां की तरफ देखा। मां ने तुरंत ही कहा–'बेटा ! औलिया जैसे फकीर हैं, तो लकड़ी का गट्ठर दे दो। हमें दुआ देंगे।' यूं कहा तो लड़के ने अपना सारा गट्ठर दे दिया। फिर मां ने कहा बेटे ! 'मेरे गट्ठर में से भी दो लकड़ी डाल दे, जिससे मेरी भी अच्छा हो जाए।' इस प्रकार लकड़ी का गट्ठर लेकर मनजी ठक्कर स्वामिश्री के पास आए। स्वामिश्री जी ने पूछा–कुछ लिया? तब उन्होंने कहा–नहीं स्वामी ! कुछ लिया नहीं, लेकिन दुआ की आशा से मुफ्त गट्ठर दे दिया है। वृद्धा ने भी अपने गट्ठर में से दो लकड़ी डलवाई है। स्वामिश्री यह सुनकर बहुत ही खुश हुए और मार्मिक वाक्य बोले–'**अब उसे लकड़ी काटनी नहीं पड़ेगी।**' फिर मनजी ठक्कर ने तापने के लिए लकड़ी जलाई। थोड़ी देर तापकर स्वामिश्री उठे

और सभी संतों-हरिभक्तों के साथ मंदिर चले गए।

लकड़हारा बाऊद्दीन तथा उसकी मां शहर में लकड़ी का गट्ठर बेच कर घर गए। उस रात बाऊद्दीन अपनी बहन को लेकर बाजार में निकला तो वहां नवाब साहेब की सवारी निकली। नवाब ने बाऊद्दीन की बहन को देखा। उसका रूप तथा यौवन देखकर उसके साथ शादी करने की उसे इच्छा हुई ! नवाब साहेब ने बाऊद्दीन तथा उसकी बहन को दरबार में बुलाया और स्वयं बात करी। दूसरे दिन अपनी मां की सम्मति लेकर बाऊद्दीन ने अपनी बहन की शादी नवाब के साथ कराई। बाऊद्दीन को नवाब ने अपने यहां नौकरी पर रख लिया। उसके बाद बाऊद्दीन धीरे-धीरे तरक्की करके दीवान बन गया। बाऊद्दीन को भी भीतर में यह प्रतीति थी कि यह सब स्वामिश्री की कृपा से हुआ है। इस बात को अखंड ध्यान रखकर वह प्रसंगों पर मंदिर में स्वयं खाना भेजता, संतों को कपड़े ओढ़ाता। यूं सेवा करके स्वामिश्री को स्वयं का ईष्ट मानकर उनकी मर्जी अनुसार ही अंतिम तक जीवन जीया। आज भी जूनागढ़ में बाऊद्दीन के नाम की 'बाऊद्दीन कॉलेज' है। बड़े पुरुष की दृष्टि पड़ने से तो रंक हो वह भी राजा हो जाता है। दृष्टिमात्र से स्वामिश्री ने केवल थोड़ी लकड़ी की सेवा लेकर उसके गरीबी के प्रारब्ध टाल दिए। कैसी अद्भुत करुणा ! केवल थोड़े सद्भाव में ही मौज !

फिर भी आश्चर्य है कि अनंत ब्रह्माडों के अधिपति होते हुए भी हमारे लिए आदर्श रखने स्वंय एक सामान्य सेवक की अदा से पुरूषोत्तम नारायण की सेवा में खड़े पांव रहे। सब कुछ होते हुए भी ढककर-छुपाकर वर्ते ! दासभाव से वर्ते !! दूसरी ओर हम में तो दो पैसे की बरकत भी नहीं, तो भी कितना रौफ झाड़ते हैं। जबकि स्वामिश्री खुद इतने समर्थ होते हुए सेवकभाव, दासभाव से जीकर रहे, वह इस प्रसंग से दिखाई पड़ता है।

उत्तर भारत से एक साधु विश्वरूपानंद महाराज के पास आए थे और महाराज की मूर्ति का दर्शन करते ही रो पड़े। वे अचानक खूब बीमार हो गए। वे साधु स्वभाव से खूब तेज प्रकृति के चिड़चिड़े, परन्तु वैसे खूब सेवाभावी ! लेकिन उनकी तेज प्रकृति के कारण कोई साधु उनकी सेवा में एक दो दिन से अधिक टिक नहीं पाता था। आखिर महाराज ने स्वामिश्री को बुलाकर कहा कि 'विश्वरूपानंदस्वामी की तेज प्रकृति के कारण उनकी सेवा में रहने कोई तैयार नहीं, सो अब तुम उसकी सेवा में रहो.... उसकी सेवा भी हो सकेगी और तुम्हारे द्वारा महिमा समझ कर भगवान में जुड़ेगा.... उससे उसका कल्याण भी होगा...।' जैसे अर्जुन के जब सभी बाण निष्फल हो जाते तो वह आखिर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता.... वैसे ही हर कठिनाई के प्रसंगों में–चाहे बीमार साधुओं की सेवा हो, चाहे वेदान्तियों के साथ शास्त्रार्थ करना हो, चाहे दूसरों को कुछ सिखाना हो, चाहे हरिभक्तों को कोई समाधान देना हो महाराज की दृष्टि स्वामिश्री पर ही जाकर टिकती... स्वामिश्री ने महाराज को कैसा अनोखा हकदावा दिया होगा? कैसा समर्पण किया होगा कि महाराज उन्हीं के ही कन्धे का उपयोग निधड़क कर पाते थे। स्वामिश्री तो विश्वरूपानंदस्वामी की सेवा में लग पड़े.... महाराज की आज्ञा वही उनका निशान था। महाराज की आज्ञा में स्वामिश्री को महाराज की मूर्ति का अखंड संबंध दिखाई पड़ता.....

इसी गुणातीत परम्परा के वारिसदार प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई आज हमें साक्षात् प्रभु की मूर्ति का सुख दे रहे हैं। हमारे लिए स्वयं एक 'सेवक' बनकर दिन-रात अविरत परिश्रम कर रहे हैं। यूं हम 'गुणातीत खानदान' के हैं.... तो मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के इस प्राकट्य दिन के शुभ अवसर पर यही प्रार्थना कि स्वामिश्री जैसा दासत्व, सेवकभाव के गुण हम में भी आए.... प्रत्यक्ष स्वरूप की यथार्थ महिमा हम समझे और गुणातीत परिवार की 'खानदानी' से हम चूके नहीं।

और.... गुणातीत समाज के लिए अन्य शुभ अवसर की गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को दीक्षा देने के लिए दो सांकेतिक दिन चुने..... 'विजयादशमी' पर पार्षदी दीक्षा यानि–अंतर के अहम्–वृत्तियों पर ऐसे गुणातीत संत द्वारा ही विजय निश्चित है। और..... शरदपूर्णिमा पर भागवती दीक्षा

दी–सच्ची शीतलता, सच्चा उजाला भी तो भगवान रखे पवित्र संत द्वारा ही संभव है.... सो कोटि धन्यवाद गुरुहरि योगीजी महाराज को जो ऐसे परम पवित्र साधु की भेंट हमें दी और हम सभी के लिए अत्यधिक आनंद की बात है कि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी 61वें वर्ष में पदार्पण करेंगे। हरिधाम-सोखड़ा में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के षष्ठीपूर्ति महोत्सव की (हीरक जयंती की) तैयारी खूब जोर-शोर से चल रही है जिसे 'आत्मीय महोत्सव' नाम दिया गया है। 29 दिसम्बर' 94 से 1 जनवरी' 95 तक हरिधाम में खूब धूमधाम से मनाने का आयोजन किया गया है।

इस महोत्सव के लिए प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने पहले एक सूत्र में ऐसा लिखवाया कि **'कोई आत्मीय बने या ना बने, मुझे बनना है।'** परन्तु इस सूत्र में मन का एक आभास यह रह जाता था कि दूसरे तो शायद आत्मीय हैं नहीं और मैं ही बनने की कोशिश कर रहा हूँ..... सो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने इस सूत्र को बदलवाया कि **'सब आत्मीय हैं ही; मुझे आत्मीय बनना है।'** और इस बात की पुष्टि करती है मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की एक बात–**'मुझे अकेले को ही काम परेशान करता है.... दूसरे किसी को नहीं,'** मेरे में ही सारे दोष भरे हुए हैं बाकी सब तो निर्दोष हैं–ऐसा समझेंगे तो सत्संग में दास बनकर विनम्र रह पायेंगे तो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की दीक्षा जयंती पर सभी प्रत्यक्ष गुणतीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि **'आत्मीय महोत्सव'** तक में तो यह सूत्र जीवन में सार्थक कर पाएं–ऐसी अभीप्सा !

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

364. महापूजा में बैठते समय बोले कि–यह जो बैठा है उसके हाथ में सब कुछ है और सब कुछ उसी में है। प्र.5,135

365. ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण कहलाता है, बनिये का लड़का बनिया कहलाता है; इसी तरह पुरुषोत्तम की उपासना से हमारी तो देह बंध गई, सो अक्षररूप हो गए हैं। इसलिए स्वयं का स्वरूप अक्षर मानना। प्र.5,136

366. जैसा शब्द सुनते हैं वैसा जीव होता है। रज, तम और सत्त्व ये देह के भाव हैं। वह तो होंगे ही। भूख लगे, प्यास लगे, दुःख-सुख हो वह देह के भाव हैं और मन तो नील बंदर जैसा चंचल है। वह उछलकूद करता रहेगा और हम तो इससे पर क्षेत्रज्ञ हैं। सो, देह इन्द्रिय-अंतःकरण के इन भावों को स्वयं के मानने नहीं। हम तो इनसे पृथक् हैं; इसलिए इनसे हारना नहीं चाहिए, बल्कि लड़ाई लेते रहना चाहिए। प्र.5,137

367. अंत्य प्रकरण का दूसरा तथा वरताल का पांचवा वचनामृत पढ़वाकर बात करी की अष्टांग योग, व्रत, दान, तप ये सब किया फिर भी जीव में गंद रही ! फिर भगवान ने साधुरूप ले कर जीव को शुद्ध किया। स्वयं में तो भले ही माया हो, लेकिन उपास्य मूर्ति में तो माया समझे नहीं, तो उसका मोक्ष हो चुका समझना। प्र.5,138

368. यज्ञ में महाराज ने स्वरूपानंदस्वामी को कहा कि–लोग बहुत इकट्ठे हो गए हैं, सो हमारी लाज जाएगी, सीधा-सामान कम पड़ेगा। तब वे बोले ब्रह्म की लाज नहीं जाती; लाज यदि जाएगी तो लक्ष्मीजी की जाएगी। प्र.5,139

369. स्वरूपानंदस्वामी को कहा कि आप चमत्कार बहुत करते हो? तब बोले कि–इसमें क्या? प्र.5,140

370. स्वरूपानंदस्वामी को बीमारी होने पर महाराज ने पूछा कि तुम्हें बहुत तकलीफ हो रही है? तब स्वरूपानंदस्वामी बोले कि–टट्टु दुबला है, पर अस्वार तो खूब बलवान है। प्र.5,142

371. महाराज व ये साधु सबसे पर हैं और समर्थ हैं फिर भी वेद की मर्यादा में रहते हैं व दूसरे

अवतारों जैसे चरित्र नहीं करते, ताकि दूसरों को गुण आये और बहुत जीवों का कल्याण करना है सो मर्यादा में रहते हैं। वर्ना उन्हें स्वयं को तो कुछ स्पर्श नहीं करता।

प्र.5,143

372. उपासना से मोक्ष होता है। धर्म, वैराग्य और आत्मनिष्ठा अकेले कुछ मोक्ष नहीं कर पायेंगे। ऐसे साधु और कहीं पर नहीं हैं तथा ऐसा जोग मिलना भी दुर्लभ है। इसलिए समझ नहीं हो तो जिन्हें पूजने हैं वे रह जाएं और दूसरे पूजे जाएं। भगवान का मूल प्रतिमा व तीर्थ है तथा गृहत्व का मूल संतान है।

प्र.5,144

373. बड़प्पन तो महाराज को पुरुषोत्तम जानें व आज्ञा पाले उसकी है। प्रगट हो तब तो सभी आज्ञा में रहें, परन्तु दूर जाने पर–पीछे से आज्ञा बराबर वाले वे सच्चे माने जायें।

प्र.5,145

374. जूनागढ़ के तो महाराज जमानती हुए हैं।

प्र.5,146

375. सौ मनका अत्यधिक तेज तवा गर्म करा हो और उस पर सौ घड़े भी पानी डालो तो भी ठंडा नहीं होता, किसी धोध में डाले तो ठंडा हो। वैसे ही समागम धोध जैसा है और फिलहाल ऐसा कल्याण होता है जैसे चार महीने लगातार बरसात हुई हो, उसमें तवा गर्म नहीं रहता, वैसा कल्याण होता है।

प्र.5,147

376. अभिनिवेश हो तो चाहे उसे वेद कहें, गुरु कहें तब भी माने नहीं और पंच विषय का अभिनिवेश तो गुरुरूप गोविंद प्रगट साक्षात् मिलने से ही टल जाता है और सीमा से परे, विहद् ऐसा अक्षरधाम को पा लेता है। इसलिए ऐसे मौके में भी यदि कसर रह गई उसे पछताना रहेगा और फिर सुनने वाले होंगे, पर कहने वाले नहीं मिलेंगे। प्र.5,148

377. ज्ञान करते-करते बहक नहीं जाना, ना ही हीनता महसूस करना। जैसे समझते हो, वह समझना लेकिन बाहर यूं महिमा नहीं कहना। कहने से महिमा नहीं होता और जो है वह चली जाने वाली नहीं है। महाराज को जो भगवान कहते थे उनसे वे रूठ जाते थे और धीरे-धीरे वचनामृत में स्वयं की महिमा लिख दी। यूं करना, लेकिन बहक नहीं जाना और महिमा वाले वचन मानना लेकिन हल्का वचन मानना नहीं। उस पर नित्यानंदस्वामी ने महाराज के साथ सात दिन तक जो टक्कर ली वह बात करी। यूं महाराज द्वारा डिगाने पर भी डिगे नहीं। ऐसा निश्चय करना चाहिए। बात तो हमारी सच ची है पर दूसरे हमारी महिमा सह नहीं पाये सो परेशानी खड़ी कर देते हैं। सो बाहर बात नहीं करना और तुम समझते हो, वैसे समझना। लेकिन बहक जाओगे तो दिन निकलते ही दुःख आयेगा और हम ऐसा वर्ते हैं कि कोई हमें पहचान नहीं पाये। तुम यूं वर्तना और कर्ता भगवान को जानना। प्र. 5,149

378. भगवान भजने पर लोक का दुःख आए और विपरीत देशकाल का दुःख आए फिर भी पीछे डग भरना नहीं। धीरज रखनी। धीरे-धीरे सब दुःख टल जाते हैं। सो, पीछे डग नहीं भरना। वहां दृष्टांत दिया कि प्रद्युम्न युद्ध में पीछे नहीं हटा। फिर भगवान ने शंख बजाया जिससे सभी नाश हो गए। शंख की जगह यह साधु की बात है जिससे सभी दुःख नाश हो जायेंगे। सो, धीरज रखना, पीछे हटना नहीं.....

प्र.5,150

379. हरिशंकरभाई ने पूछा कि वड़वानल अग्नि जैसा साधु कैसे पहचानने? तब कहा कि 'सत्संगीजीवन' में उसके लक्षण कहे हैं कि 'पुष्पहाराः संर्पाय' यूं जिसको पुष्प के हार सर्प जैसे लगे तथा भगवान की मूर्ति को अखंड धारे और सत्संग शब्द का जो अर्थ बताया है वैसे लक्षण हो तथा बहुत जीवों को भगवान भजते

करे व स्वयं शुद्ध रहे, जरा भी आज्ञा को नजरअंदाज नहीं करे ऐसा हो। कोई तो भगवान् के बल से बहुतों को भगवान भजवाए ऐसा हो लेकिन खुद चला जाए, ऐसा हो। गोपालानंदस्वामी को जिसने सत्संग कराया वह गुरु भी चले गए। इसलिए यूं बड़प्पन समझना नहीं। यह तो व्यवहारिक बड़प्पन है। लेकिन वचनामृत में जैसे बड़प्पन समझाया है कि–भगवान का निश्चय हो व आज्ञा पाले वह बड़ा है। यदि बड़वानल अग्नि जैसा न हो तो इतने सारे लोगों को सत्संग कराए व स्वयं निर्लेप कैसे रह पाये ! यूं ही हमारे मानने से कोई बड़ा नहीं हो जाता। महाराज की आज्ञा के मुताबिक बड़प्पन समझना। चार प्रकार के प्रश्न में दूसरों ने ध्यान के लिए कहा और महाराज ने बातें करने कहा। प्र.5,152

380. पर्वतभाई का नाम ग्रंथ में कहीं नहीं लिखा हुआ, लेकिन वे अतिशय बड़े थे। प्र.5,153

381. सभी प्रकार की बातें जिससे समझी जाए उसे सबसे बड़ा समझना और सभी सत्संगीयों से जीव न जोड़ पाये, लेकिन दो जनों के साथ तो जीव जोड़ ही देना। उसके सिवा कहीं माल न माने वह जीव जोड़ा कहलाए। दूसरों का देह से संग तो भले हो। प्र.5,155

382. महाराज ने वचनामृत में स्वयं का जो वर्तन कहा–वह तो स्वयं के मुक्त का ही कहा है यूं समझना और पुरुषोत्तम व धामरूप इन दोनों को तो उससे पर समझना। महाराज को तो अपार-अपार ही समझना। प्र.5,156

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 1.10.94	शनिवार	–	एकादशी, व्रत ब्र.स्व. गुरुहरि योगीजी महाराज का श्राद्ध दिन
(2)	दि. 2.10.94	रविवार	–	ब्र.स्व. प.पू. काकाजी महाराज का श्राद्ध दिन
(3)	दि. 3.10.94	सोमवार	–	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी व भगतजी महाराज का श्राद्ध दिन
(4)	दि. 5.10.94	बुधवार	–	नवरात्रे प्रारम्भ
(5)	दि. 13.10.94	गुरुवार	–	दशहरा प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(6)	दि. 15.10.94	शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(7)	दि. 19.10.94	बुधवार	–	शरदपूर्णिमा मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दिक्षा दिन

आत्मीय महोत्सव.....

जीवन का परम सौभाग्य एवं सुनहरी घड़ी कि प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी महाराज की हीरक जयंती साक्षात् गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकर भाई, प.पू. हरिभाई साहेब की निश्रा में 'हरिधाम' सोखड़ा–गुजरात में दि. 29 दिसम्बर' 94 से 1 जनवरी' 95 तक समग्र गुणातीत समाज भव्यता से मनायेगा..... आईए, इस शुभ अवसर पर हमसभी 'हरि धाम' जाकर दर्शन, सेवा, समागम का अद्‌भुत लाभ व आशीर्वाद प्राप्त करें.....

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
A-103, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi Tel.: 2262473